ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

सदा याद रखें

लेखक : स. जसबीर सिंघ

क्रांतिकारी गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

Website : www.sikhworld.info

नोटः यहां दी गई सारी जानकारी लेखक के अपने निजी विचार हैं। यह जरूरी नहीं कि सभी लेखक के विचारों से सहमत हों।

सदा याद रखें

सिख न केवल एक अकाल पुरख का नाम ही सिमरण है जो सब को पैदा करने, पालन पोषण करने तथा मारने के समर्थ है। गुरु ग्रंथ साहिब के अतिरिक्त किसी अन्य देहधारी को गुरु नहीं मानना और न ही किसी को प्रणाम (मत्था टेकना) करना है। सिख ने अमृत वेले (तड़के) उठ कर स्नान के बाद वाहिगुरु का स्मरण करना है और फिर गुरबाणी का पाठ (नितनेम) करना है। गुरबाणी का पाठ करते समय जल्दी नहीं करनी चाहिये । प्यार सत्कार सहित, मन को टिका कर, समझ विचार कर शुद्ध करना चाहिये।
गुरुसिख को रोज़ाना गुरुद्वारे जाकर कीर्तन कथा श्रवण करके अपने जीवन को सफल बनाना है। सिख के लिये धार्मिक स्थान केवल गुरुद्वारा ही है अन्य कोई नहीं। सिखों ने आपस में मिलते समय 'वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतेह ही बुलानी है।
गुरबाणी की पोथियों, गुटकों आदि को रुमाल में लपेट कर सत्कार सहित रखना है और जूठे हाथ नहीं लगाने चाहिये।
सिख ने अपना नाम 'सिघ' या 'कौर' शब्द सहित लिखना है। नाम के साथ जाति गोत नहीं लिखना। सिख धर्म में नाम सिमरण को ही सच्चा तीर्थ माना गया है। और तीर्थ यात्रा या तीर्थ स्नान की सिख अपने बहुमूल्य विरासत को जान सकें। सिख ने कुश्तियों तथा दूसरी खेलों में हिस्सा लेना है मगर गंदी फ़िलमें और नाटक, जिनमें गंदे सीन दिखाए जाते हैं, उनसे दूर रहना है। सिख ने कभी भी किसी किस्म का नशा (शराब, भंग, तम्बाकू, सिग्रेट, स्मैक) आदि नहीं करना।
सिख लड़कियों ने नाक कान का छेदना तथा छेदक गहनों को प्रयोग नही करना क्योंकि सिख रहित मर्यादा अनुसार मना है। सिख स्त्रियों के लिए घुंघट निकालना सिख धर्म में मनाह है। सिख पुरुष तथा स्त्री के लिए नंगे सिर बाज़ारों में घूमना तथा नंगे सिर रहना मनाह है। केशों के सत्कार के लिये हर समय दस्तार या चुन्नी से केश ढाँपकर रखने है। सिख स्त्रियों ने किसी किस्म का कोई व्रत नहीं रखना । करवा चौथ, अमावस, पूर्णमासी, आदि व्रत नहीं रखने, निरोल मनमति है।
सिख कभी श्राद्ध नहीं करते और न ही श्रादों में हिस्सा लेना है। सिख के लिये सारे दिन शुभ हैं। अच्छे-बुरे दिनों का विचार नहीं करना। संग्राद, अमावस, पूणवासी आदि दिन कोई खास पवित्र नहीं बल्कि बाकी दिनों जैसे ही हैं।
गुरमिख ने कभी किसी पंडित या ज्योतिषी पर विश्वास नहीं करना और न ही राशि फल के चक्कर में पड़ना है। जन्म समय जन्म-कुण्डली नहीं बनवानी और शादी के लिए साहा मूर्हत नहीं निकलवाना।
सिख ने मूर्ति पूजा नहीं करनी। फोटो या मूर्ति को हार नहीं चढ़ाना, धूप देना सिख रहित मर्यादा अनुसार मनाह है। गुरु साहिब की प्रचलित तस्वीरें भी असल तस्वीरे नहीं है और न ही गुरु साहिब की फोटो तस्वीरे या मूर्ति ही बनवानी चाहिये।
श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पीढ़े को मुठियां भरना, दीवारों या थड़ो पर नाक रगड़ना या मंजी साहिब के नीचे पानी (जल) रखना मनमति है।
किसी मनुष्य का सतिगुरु के प्रकाश समय संगत में गदेला या कुर्सी पर बैठना मनमति है।
कीर्तन करते समय गुरबाणी से बाहर की मनघंड़त और फालूत पंक्तियां लगा कर धारण (लय) लगाना मनमति है।
संगत में एक समय एक ही क्रार्यक्रम होना चाहिए, अर्थात् कथा या कीर्तन या पाठ। अखंड पाठ या सहज पाठ के साथ उसी स्थान पर कथा, कीर्तन या लैक्चर नहीं होना चाहिए।
अखंड पाठ या सहज पाठ स्वयं करना चाहिए। यदि खुद न कर सको तो किसी समझदार पाठी (ग्रंथी) से करवा सकते हो, मगर खुद पाठी के पास बैठकर पाठ सुनना चाहिए। ऐसा न हो कि पाठी अकेला पाठ करता रहे और पाठ रखवाने वाले घरेलू कामों में लगे रहे। ऐसे पाठ का कोई लाभ नहीं । खाली कर्म काण्ड है।
कड़ाह प्रशाद और लंगर खाने के समय जल्दी नहीं करनी चाहिये।
संगत में कड़ाह प्रशाद बांटने से पहले पांच प्यारों का हिस्सा निकाल कर बाँटना चाहिए। फिर प्रशाद श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सेवा में बैठे हुए सिंघ के लिये कटोरी में डाल कर देना चाहिए ताकि वह सेवा मुक्त होने पर खा सके। फिर संगत मे बांटना चाहिए।
अरदास होने के वक्त संगत के सारे स्त्री-पुरुष हाथ जोड़ कर खड़े होने ज़रूरी है।
गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी (हुक्म) को मानना ही गुरु ग्रंथ साहिब जी का पूर्ण सत्कार है।
सिख के लिये हुक्म है कि प्रत्येक कार्य को आरम्भ (शुरू) करने से पूर्व वाहिगुरु के सम्मुख अरदास करें।
कंठ करने के लिये शब्द

किसी भी जाति की उन्नत और अवनति दशा का पता उसके रहन-सहन, खान-पान, स्वास्थ्य, बर्ताव, शिक्षा, साहित्य, संगठन और जीवन निर्वाह के साधनों को देखकर सहज ही चल सकता है । इन्हीं दृष्टियों से हम सिक्ख जाति की अवस्था का दर्शन करना चाहते हैं ।

आमतौर से सिक्खों का रहन सहन आडम्बरपूर्ण नहीं है । उनमें जो ठाठ-बाट से भी रहते हैं, उसमें भी विलासिता की गंध बहुत कम होती है । शहरों का रिवाज अभी गाँवों में बहुत कम पहुँचा है । पुरूष पगड़ी, कुर्ता, कच्छ, पाजामा, धोती, कोट, अचकन, सलवार आदि पहनते हैं । साधारण पहनावा कच्छा, कुर्ता और पगड़ी का ही है । धोती प्रायः तहमदनुमा बाँधते हैं ।

अपेक्षाकृत सिक्ख स्त्री पुरूष और बच्चे साफ सुथरे रहते हैं । देहातों में भी अपने सम व्यवसायी अन्य लोगों की अपेक्षा सफाई की ओर उनका ध्यान अधिक रहता है ।

खान-पान

अधिकांश में सिक्खों की आबादी देहात में ही ज्यादा है और जो शहरों में भी हैं वह भी खान पान सम्बन्ध ी अपनी पैतृक आदतों को बहुत दूर तक पालते हैं । गाय भैंस अधिक रखने के कारण घी, दूध खूब खाते हैं । लस्सी उनका उतना ही प्रिय पेय है जितना कि अँग्रेजों का चाय। कढ़ाह प्रसाद (हलवा) उनका सबसे प्यारा भोजन है । प्रत्येक उत्सव और त्यौहार पर कढ़ाह प्रसाद अवश्य बनवाते हैं । महमान की खातिरदारी में भी कढ़ाह प्रसाद का ही ऊँचा स्थान है । ब्रज के जमींदार जिस प्रकार खीर को देवताओं का भोजन का नाम देकर प्रिय मानते हैं, उसी प्रकार सिक्ख कढ़ाह प्रसाद में धार्मिक भावना रखते हैं ।

भोजन को रसोई, खाना और भोज्य न कहकर प्रसादा कहते हैं । भोजन करने को प्रसादा छकना कहते हैं उनके यहाँ साधारण भोजन (दाल, रोटी, साग आदि) प्रसाद कहलाता है हलवा कढ़ाह प्रसादा और माँस भोजन महाप्रसाद कहलाता है । वैसे महाप्रसाद कढ़ाह प्रसाद की तरह ऊँचा स्थान नहीं रखता और न उसके खाने को लाजिमी करार दिया गया है किन्तू चूंकि आरम्भ में जो जातियां सिक्ख पंथ में शामिल हुई थीं उनमें से अधिकाँश माँस के आदि नहीं थे इसीलिए इस को महाप्रसाद इतना बड़ा नाम दिया गया । उन दिनों सिक्खों की हालत यह हो ही गई थी कि जंगलों में भूखे मरने की नौबत में महाप्रसाद से ही प्राण रक्षा की जा सकती थी । महाप्रसाद ताजा माँस का बनता है इसीलिए झटके का खाना निहित बताया गया है ।

स्वास्थ्य

सिक्ख धर्म के अन्दर कुछ ऐसे भी समप्रदाय हैं, जिनमें माँस कतई नहीं खाते । पँजाब जैसे देश में जहाँ गेहूँ और बाजरा जैसे बलिष्ठ अन्न बहुतायत से पैदा हाते हैं, सौभाग्य से सिक्खों का यही उपनिवेश है । खान पान का सुढंग और सादगी इसके अलावा कुसंस्कारों से निवृत और परिश्रम से रूचि । यह बातें ऐसी हैं जो स्वास्थ्य की सर्वोतम गारंटी है । यही कारण है कि दूसरे लोगों की अपेक्षा सिक्ख अधिक तगड़े, सुदृढ़ और बलवान होते हैं । अपनी इस मजबूती के कारण उन्होंने सैनिक जातियों में अपनी सर्वोच्च गणना कराने का सौभाग्य हासिल किया है । वे शारीरिक, मानसिक परिश्रम से नहीं घबराते हैं । अतः खेती और सरकारी सर्विस में वे उन्नति पर

हैं । उनके स्वास्थ्य भारत ही नहीं किन्तु सँसार में सर्वोपरि बना देने लायक हैं, किन्तु खेद है कि व्यायाम का इनमें बहुत कम चलन है । सिक्ख गाँवों में अखाड़ों (मल्ल युद्ध के स्थान) और दंड बैठक लगाने वालों की कमी है । फिर भी वे अपनी मजबूती और अच्छे स्वास्थ्य के लिए भारत में अच्छा स्थान रखते हैं ।

स्वभाव और बर्ताव

सिक्ख स्वभाव से विनोदी और हँसमुख होत हैं । चिड़चिड़ापन बहुत ही कम उनके मिजाज में होता है । पहली बार की मुलाकात में ही वे खुलकर बातें करते हैं । उनसे मिलने पर ऐसा नहीं मालूम पड़ता कि किसी नये और अपरिचित व्यक्ति से बातें की जा रही हैं । यद्यपि उनके अन्दर राजसी गुण अधिक हैं फिर भी वे हृदय के तीव्र और कठोर नहीं होते ।

बातचीत वे स्पष्ट कहने और सुनने की आशा करते हैं । जहाँ तक भी हो सकता है उनकी बातचीत लाग लपेट की नहीं होती । उनके स्वभाव में अहंमन्यता की झलक भी नहीं होती । बड़ों का आदर करने की उनमें विशेषता है । साधु संतों के प्रति उनके दिल में भक्ति है । ब्राह्मणों के लिए उनके लिए उनके धर्म में उतना ऊँचा दर्जा नहीं किन्तु उनके दिल में उनसे कोई घृणा भी नहीं है । यद्यपि उनका उत्थान मुसलमान शासकों की जायदाद के कारण हुआ किन्तु पड़ौसी मुसलमान के साथ वे सदैव हमदर्दी का व्यवहार करते हैं । ऐसा वे किसी पालिसी से करते हों, यह बात नहीं किन्तु उनका स्वभाव ही ऐसा है ।

दान पुण्य करने में उनका स्वभाव और मन कंजूस नहीं, यही कारण है कि उनके धार्मिक स्थानों पर इतनी आमदनी होती है, जितनी की भारत की किसी भी बड़ी रियासत की हो सकती है।

वे अपमान को बहुत कम बर्दाश्त करते हैं । वह फिर चाहे अपने घर वालों की ओर से हो चाहे बाहर वालों की तरफ से । इस मामले में वे कभी कभी विवेक को भी ताक में रख देते हैं, यही कारण हैं कि आये वर्ष प्रत्येक जिले में उनमें आपस में भी खून खराबियाँ हो जाती हैं ।

सैनिक प्रधान जाति होने के कारण धोखा और दगा–फरेब भी वे किसी के साथ नहीं करते यों अपवाद सभी जगह होते हैं ।

अपनी बात के लिए उनके स्वभाव में जिद भी है । कभी कभी तो ‘हमीर हठ’ का रूप उनकी बात धारण कर लेती है ।

नाच रंग में सामूहिक रूप से उनकी रूचि बहुत ही कम है । खेलकूद और घोड़े की सवारी उनकी रूचि की चीजें हैं ।

उनकी स्त्रियों का स्वभाव भी संकुचित और कटुतापूर्ण नहीं होता । कथा कीर्तन में उनकी रूचि पुरूषों की अपेक्षा कहीं अधिक होती है । उन्हें बढ़ा हुआ कुटुम्ब अच्छा लगता है । सिक्ख स्त्री की लालसा रहती है कि उसकी कई सहेली हों और घर में देवरानियों का टोला किन्तु जमाने के साथ अब उनमें से यह भावना विनष्ट होती जा रही है ।

जीवन निर्वाह के साधन

पँजाब या भारत के किसी भी हिस्से के उन लोगों को जिन्होंने सिक्ख धर्म ग्रहण किया है । उनके लिए पारमार्थिक लाभ कितने हुए हैं । यह तो सिक्ख ही जानें किन्तु दो लाभ तो इतने प्रत्यक्ष हैं कि उन्हें कोई भी

आदमी जिसे तनिक भी समझने का माद्दा है, सहज ही में जान सकता है । एक तो है सामाजिक समानता का जिस पर हम आगे के पृष्ठों में प्रकाश डालेंगे । दूसरा है पेशे की आजादी का । खत्री सिक्ख चाहे तो दर्जी और मोची का काम कर सकता है और दर्जी सिक्ख चाहे तो ज्ञानी और मंत्री बन सकता है । जो कि अब जमाने के परिवर्तन के साथ ऐसी स्थिति हो गई है कि दूसरी जातियाँ भी चाहे जिस पेशे को कर सकती हैं किन्तु सर्वप्रथम यह आजादी दी थी सिक्ख धर्म ने ही । पेशे और जाति का सिक्ख धर्म से कोई खास सम्बन्ध नहीं है । इसका फल यह हुआ कि सिक्खों ने आर्थिक अवस्था ठीक बनाये रखने के लिए चहुँमुखी उन्नति की । राज्य का ऐसा कोई महकमा नहीं जिसमें सिक्ख न मिलेंगे । ज्ञात सँसार का ऐसा कोई कोना नहीं जहाँ सिक्ख जीवन निर्वाह के लिए नहीं पहुँच गये हों । कला कौशला, दस्तकारी आदि सभी धंधों को सीखने में उन्होंने पहल की है ।

खेती के काम में भी नये आविष्कारों को आजमाने में वे पीछे नहीं रहे । गाय, बैलों की नस्ल सुधारने तथा अच्छे अच्छे पशु पालने में उनकी रूचि सदैव उन्नत रही है । अच्छे बीज, अच्छा गुड़, अच्छी कपास पैदा करके सिक्खों के खेतिहर समुदाय ने अपने को अग्रणी ही साबित करने की कोशिश की है ।

हिन्दुस्तान में खास तौरसे हिन्दुओं में उन्होंने सर्वप्रथम ईरान और काबुल से घोड़ों और हथियारों के लाने का व्यापार आरम्भ किया था ।

इस प्रकार जीवन निर्वाह के प्रत्येक धंधे में से सिक्ख रूचि रखते हैं । यही कारण है कि उत्तरोत्तर उनका समाज हरेक क्षेत्र में उन्नत होता जा रहा है ।

संगठन

किसी भी मानव समाज का संगठन किन्हीं विशेष परिस्थितियों में किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए होता है । परिस्थितियों के निकल जाने अथवा उद्देश्य की पूर्ति के बाद स्वभावत: उस संगठन का छिन्न भिन्न हो जाना अनिवार्य है पर चूंकि वह उत्तम संगठन सदैव बना रहे इसलिए उसे स्वायित्व देने के लिए उन साधनों के प्रति अटूट श्रद्धा के भाव पैदा होना आवश्यक होता है जिनके सहारे यह संगठन उन्नत होकर उद्देश्य की पूर्ति करता है । प्रत्येक ऐसे संगठन के जिसका कि आरम्भ धार्मिक मित्ति पर हुआ हो कम से कम पाँच साधन होते हैं । (1) धर्म पुस्तक (2) धर्म स्थान अथवा तीर्थ (3) पर्व और त्यौहार (4) अनुशासन और (5) प्रथायें ।

सिक्खों की धर्म पुस्तक श्री ग्रंथ साहब जी हैं इस सम्बन्ध में हम पिछले अध्याय में काफी लिख चुके हैं । अत: शेष चार आचारों पर अब कुछ प्रकाश डालना चाहते हैं ।

सिक्खों के पाँच प्रकार के धर्म स्थान हैं (1) वे जहाँ जहाँ गुरू साहिबान ठहरे थे और अब उन स्थानों पर स्मारक स्वरूप धर्मशालायें, गुरूद्वारे अथवा दमदमा हैं (2) जहाँ जहाँ गुरू साहिबान का जन्म हुआ था और वे स्वर्गारोहण हुए (3) वे स्थान जहाँ जहाँ गुरू साहब ने बावली, तालाब आदि बनवाये (4) जहाँ जहाँ गुरू और उनके प्यारे शहीद हुए (5) जहाँ जहाँ उनके भक्त उनकी दी हुई वस्तुओं को ले गये और जहाँ कि उन्होंने उन वस्तुओं के रखने के लिए स्मारक स्थान बना लिये । इनके अलावा आज भी जहाँ जहाँ सिक्ख हैं प्राय: वहीं वहीं गुरूद्वारे बने हुए हैं और बनते जा रहे हैं किन्तु पुराने धर्मस्थान वे ही हैं जो उपरोक्त पाँच प्रकारों में से हैं

। हालांकि उनमें कुछ तो बहुत पीछे के बने हुए हैं, फिर भी उनकी स्मृति का महत्त्व उस समय से सम्बन्ध रखता है, जिस समय का कि उनके साथ इतिहास जुड़ा हुआ है ।

यह तो निर्विवाद सही बात है कि धार्मिक भावनाओं के अनुसार प्रत्येक धर्मस्थान तीर्थ होता है किन्तु लौकिक भाषा में तीर्थ उसे कहते हैं जहाँ किन्हीं विशेषद पर्वों पर भारी जनसमुदाय इक्ट्ठा होकर प्रथा के अनुसार धार्मिक क्रियाओं को पूरा करता हो ।

सिक्खों में इस प्रकार के बड़े बड़े तीर्थों की सँख्या इस प्रकार है - (1) श्री बावली साहब (2) अमृतसर (3) मुक्तसर (4) दमदमा साहब (5) करतारपुर (6) तरनतारन (7) ननकाना (8) गोबिन्द वाल बावली साहब (9) देहरा गुरू श्री अर्जुनदेव (10) देहरा बाबा नानक (11) पटना साहब (12) अविचलनगर (13) फतहगढ़ सरहिंद (14) चमकौर साहब (15) खडूर साहब इनके सिवा करतारपुर और कीरतपुर आदि भी हैं ।

इनमें इतने तख्त हैं (1) अकाल तख्त जो अमृतसर में है (2) तख्त पटनासाहब (3) तख्त केशगढ़ आनन्दपुर में (4) तख्त हुजूर साहब अविचलनगर ।

इनमें तरनतारन और अमृतसर का तो इतना बड़ा नाम हो रहा है जिन्हें सारा हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तान से बाहर के लोग भी जानते हैं किन्तु यदि हम सिलसिले से आरम्भ करें तो पहले ननकाना साहब का वर्णन करना होगा । लाहौर से 48 मील पश्चिम शेखूपुरा जिले में रायबुलारकी जो तलवण्डी थी और जिसमें कि गुरू नानकदेव जी महाराज का अवतार हुआ था वही अब गुरू जी के नाम पर ननकाना अथवा नानकायन अर्थात् नानदेव का घर कहलाता है । वहां 'जन्म स्थान' गुरूद्वारा बना हुआ है । यह गुरूद्वारा बड़ा आलीशान है । गुरूद्वारे से अठारह हजार एकड़ जमीन ओर नौ हजार आठ सौ बानवे रूपये साल की जागीर लगी हुई है । लगभग बीस हजार रूपया साल चढ़ावे में आ जाते हैं ।

जन्म स्थान के सिवा इतने स्थान यहाँ और हैं ।

(1) कियारा साहब - जहाँ प्रथम बार आपने अपने पशु चराये थे। इस गुरूद्वारे से 45 मुरब्बे जमीन लगी हुई है ।

(2) तम्बू साहब - जहाँ कि गुरू नानक देव जी सच्चा सौदा करने के बाद लौट कर बैठे थे ।

(3) पट्टी साहब - जहाँ कि पाधे के पास उनके पिता जी ने पढ़ने बिठाया ।

(4) बाल लीला - जहाँ कि बाल - क्रीड़ा करते थे। इस गुरूद्वारे में 120 मुरब्बे जमीन और इक्त्तीस रूपये सालाना की जागीर है ।

(5) माल जी साहब - जिस माल वृक्ष के नीचे गायें चराते हुए सो गये थे और वृक्ष की छाया स्थिर रही थी । इस स्थान से 180 मुरब्बे जमीन और 50 हजारा सालाना नकद जागीर है ।